यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना **जय महावीर** **जय गुरु राम**

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2019

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 11 आगम

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

पेपर 97 अंक एवं 3 अंक सामायिक के हैं। जैसे :- 3 सामायिक करने पर 3 अंक दिए जाएगे और 2 करने पर 2 अंक इसी क्रम में सामायिक न करने पर 3 अंक काटे जाएंगे।

1- lerk lLdkj ikB'kkyk d fo|kFkh gk rk ¼✓½ lgh ;k ¼✗½ xyr djA ¼ ½

2- vkiu fdruh lkekf;d dh g 1]2]3 dkye e fy[kA ¼ ½

प्रश्न 1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए- 10

1. जह णाम ..... वियाणंतो।
2. एकादीनि ..... चतुर्भ्यः।
3. साहप्पसाहा ..... फलं रसोय।
4. संथार ..... वि संते।
5. जहा से ..... कन्थए सिया।
6. वर्तना परिणामः ..... कालस्य।
7. तरित्तु ..... गइमुत्त मं गया।
8. चिच्चाण धणं ..... अण गारियं।
9. समुद्दगम्मीरसमा ..... केणइ दुप्प हंसया।
10. शुभं विशुद्धमव्याघाति ..... घरस्यैव।

प्रश्न 2. निम्न गाथाओं का अर्थ लिखिए- 30

1. तिण्णि सयातेत्तीसा, धणुत्तिमागो य होइ बोद्धव्वे।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्को सोगाहणा भणिया।

.....
.....।

2. जे माणिया सययं माणयंति, जत्तेण कन्नं व निवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए, स पुज्जो।

.....
.....।

3. जहा से उडुवई चन्दे नक्खत्त-परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए।

.....
.....।

4. बुद्धे परिनिव्वुडे चरे, गामगए नगरे व संजए।
सन्तिमग्गं च बहुए, समय गोयम! मा पमायए।

.....
.....।

5. स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धट। न जघन्यगुणानाम्।
गुणसाम्ये सद्दशानाम्। द्वयधिकादिगुणानां तु।

.....
.....।

6. एवं धम्मस्स विणओ मूलं, परमो से मोक्खो।
जेण कित्तिं सुयं सिग्घं निस्सेसं चामिगच्छइ।

.....
.....।

7. जहा से तिक्खसिंगे जायखन्धे विरायई।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ बसुस्सुए।

.....
.....।

8. काय प्रवीचारा आ ऐशानात्। शेषाः स्पर्शशब्दमनः प्रावीचाराद्वयोर्द्वयोः।

.....

.....।

9. सिद्धस्स सुहोरासी, सव्वद्धा पिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोणंतवग्गमइओ, सव्वागासे ण भाएज्जा।

.....

.....।

10. वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धु मरिहइ।

.....

.....।

11. श्रुतं मतिपूर्व द्वयनेकद्वादशमेदम्।

.....

.....।

12. औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्यस्वतत्वमौदयिक-परिणामिकौ च।

.....

.....।

13. संघट्टइत्ता का एणं, तहा उवहिणा मवि।
रवमेह अवराहं में वएज्ज न पूणो त्ति य।

.....

.....।

14. जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे।
सक्के देवाहिवई एवं हवइ बहुससुए।

.....

.....।

15. एक समयोदविग्रहः। एकं द्वौ वाडनाहारकः।

.....

.....।

प्रश्न 3. निम्नलिखित भावार्थ का मूल पाठ लिखें- **34**

1.उपपात जन्म से होने वाले देव, नैरयिक तथा चरमशरीरी, उत्तम पुरूष और असंख्यात वर्ष की आयु वाले युगलिक, ये सब अनपवर्तनीय आयुष्य वाले ही होते हैं।

.....

.....।

2. तब फिर ओ साधु आगमज्ञान (श्रुत) को पाने के लिए उद्यत है और अनंत-हित (मोक्ष) का इच्छुक है, उसका तो कहना ही क्या? इसलिए आचार्य जो भी कहे, भिक्षु उसका उल्लघनं न करें।

.....

.....।

3. जो (साधक) संयम यागा के निर्वाह (या जीवन-यापन) के लिए सदा विशुद्ध सामुदायिक (तथा) अज्ञात (अपरिचित कुलो से) उद्दं (भिक्षा) चर्या करता है, जो (आहारादि) न मिलने पर (मन में) विषाद नही करता और मिलने पर शलाघा नहीं करता, वह पूजनीय हैं।

.....

.....।

4. वनस्पति काय में उत्पन्न हुआ जीव उत्कृष्टतः दुःख से समाप्त होने वाले अनंतकाल तक (वनस्पतिकाय में ही जन्म-मरण करता) रहता है। इसलिए गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

.....

.....।

5. वे केवलज्ञानोपयोग द्वारा सभी पदार्थो के गुण एवं पर्यायों को जानते हैं तथा अनंत केवलदर्शन द्वारा सर्दतः- सब और से समस्त भावों को देखते हैं।

.....

.....।

6. चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन, दाना दि पाँच लब्धियाँ, क्षयोपशमिक सम्यक्त्व, क्षयोपशमिक चरित्र और संयमासंयम ये अठारह भेद क्षायोपशमिक भाव के हैं।

.....

.....।

7. जो विद्यारहित है, विद्यावान होते हुए भी अहंकारी है, जो (रसादि) लुब्ध (गृद्ध) है, जो अजितेन्द्रिय है, बार-बार असम्बद्ध बोलता है तथा जो अविनीत है, वह बहुश्रुत है।

.....
.....।

8. जो मेधावी मुनि उन गुण-सागर गुरूओं के सुभाषित (शिक्षावचन) सुनकर, तदनुसार आचरण करता है, जो पंच (महाव्रतों में) रत, (मन-वचन-कायकी) तीन (गुद्रियो से) गुप्त (होकर) चारों कषायों (क्रोध-मान-माया -लोभ) से रहित हो जाता है, वह पूज्य है।

.....
.....।

9. जहाँ एक सिद्ध है, वहाँ भव-क्षय-जन्म-मरण रूप सांसारिक आवागमन के नष्ट हो जाने से मुक्त हुए अनंत सिद्ध है, जो परस्पर अवगाढ़-एक दूसरे में मिले हुए हैं। वे सब लोकान्त का लोकाग्र भाग का संस्पर्श किये हुए हैं।

.....
.....।

10. वे नैरयिक नित्य अशुमतर लेश्या, परिणाम, शरीर, वेदना और विक्रिया वाले हैं और ये परस्पर उत्पन्न किए गए दु:ख वाले होते हैं।

.....
.....।

11. इसी प्रकार जो औपबाह्य हाथी और घोडे अविनीत होते है वे (सेवाकाल में) दु:ख भोगते हुए तथा भार-वहन आदि निम्न कार्यो में जुटाये हुए देखे जाते हैं।

.....
.....।

12. जिस प्रकार नानाप्रकार की औषधियों से प्रदीप्त, अतिमहान, मन्दर पर्वत से पर्वतों में श्रेष्ठ है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी (श्रुतमाहात्म्य के कारण स्थिर, आमर्षोषधि आदि लब्धियों से प्रदीप्त एवं समस्त साधुओं में) श्रेष्ठ होता है।

.....
.....।

13. देह का त्याग करते समय अंतिम समय में जो प्रदेश घन आकार-नाक, कान, उदर आदि रिक्त या पोले अंगो

की रिक्तता या पोलेपन के विलय से घनीभूत आकार होता है वही आकार वहाँ सिद्धस्थान में रहता है।

.....
.....।

14. ये सब ज्योतिषी देव मनुष्य लोक में सुमेरूपर्वत की प्रदक्षिणा देते हुए निरंतर गमन करने वाले हैं। घड़ी पल आदि काल का विमान इन्ही चर ज्योतिषियों द्वारा होता है।

.....
.....।

15. लोक असंख्यातवें भाग आदि में जीवों का अवगाह है क्यों कि दीपक के प्रकाश के समान जीवों के प्रदेशों में संकोच और विस्तार होता है।

.....
.....।

16. किन्तु जो साधक गुरूओं की आज्ञा के अनुसार प्रवृति करते हैं जो (श्रुतार्थधर्मविज्ञ) गीतार्थ है तथा विनय के कोविद (निपुण) हैं वे इस दुस्तर संसार-सागर (के प्रवाह) को तैरकर कर्मों का क्षय करके सवेत्कृिष्ट गति में गए है, (जाते हैं और जायेगें)। ऐसा मैं कहता हूँ।

.....
.....।

17. (उत्तम) धर्म पर श्रद्धा होने पर भी उसका काया से स्पर्श (आचरण) करने वाले अति दुर्लभ है, क्योंकि इस जगत में बहुत से धर्मश्रद्धालु जन शब्दादि कामभोगों में मूद्दित (आसक्त) होते है। अतः गौतम। समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

.....
.....।

प्रश्न 4. जोड़ी मिलाइये- **10**

1. दंड-सत्थ-परिजुण्णा	A. कुमुयं सारइयं व पाणियं
2. वोच्छिदं सिणेहमप्पणो	B. जाइजरामरण बंधण विमुक्का।
3. संसारिणस्त्राणि दुरुद्धराणि	C. असब्भवयणेहियय
4. वायादुरुत्राणि दुरुद्धराणि	D. निहियं दुहओ वि विरायइ
5. अप्पियस्सावि मितस्स	E. पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः
6. द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः	F. वेराणुबंधीणि महब्ययाणि
7. तहेवडहरं व महल्लगंवा	G. पल्योपममध्यर्घम्

8. जहा संखम्मि पयं
9. णिच्छिण्णसव्व दुक्खा
10. भवनेषु दक्षिणर्घाछिपतीनां

H. तद्माव परिणामः
I. रहे कल्लाण भासइ
J. इत्थी पुमं पव्वइयंगिहिंवा

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **16**

1. चार हाथ सोलह की सिद्धों की अवगाहना कितनी अवगाहना वाले मनुष्यों की अपेक्षा होती है?

....।

2. सौधर्म देवलोकों के देवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

....।

3. धर्म रूपी वृक्ष के मूल के द्वारा विनयी श्रमण क्या प्राप्त करता है?

....।

4. दुम पत्तयं अध्ययन में भगवान किन चिजों को पाना दूर्लभ बताया है?

....।

5. किन पाँच कारणों से शिक्षा की प्राप्ति नहीं होती है?

....।

6. जो अपने मूल स्वरूप से नाश को प्राप्त नहीं होता है वह क्या है?

....।

7. वर्ग किसे कहते है?

....।

8. क्षयोपशमजन्य के भेद से अवधिज्ञान कितने प्रकार का होता है और कौन–कौन सा?

....।

9. कितने कारणों से शिष्य अविनीत और कितने कारणों से विनीत कहलाता है?

....।

10. सिद्ध लोक के किस भाग में प्रतिष्ठित है?

....।

11. आचार्य के बार-बार कहने पर कार्य करने वाले दुर्बुद्धि शिष्य की उपमा किससे की गयी है?

.....।

12. जीव किस कारण से पराधीनता और दासता को प्राप्त कर दुःख का अनुभव करता है?

.....।

13. अपने रूप में स्थित रहते हुए भी उत्पाद और विनाश रूप परिणमन क्या कहलाता है?

.....।

14. साधु को अपना आसन और शय्या किससे नीची रखनी चाहिए?

.....।

15. अप्पकाय का जीव उत्कृष्ट कितने काल तक उसी काय में जन्म-मरण करता है?

.....।

16. पूजनीय होने के लिए मुनि को कैसी भाषा नहीं बोलनी चाहिए?

.....।